विचार बिन्दु

जिसमे आत्मविश्वास नहीं, उसमे अन्य चीजों के प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है। –विवेकानंद

धर्म ग्रन्थों की व्याख्या, धर्म स्थलों के आदर-अनादर, धर्मयात्राओं पर इतनी मारामारी क्यों?

कई बार धर्मग्रन्थों की, किसी व्यक्ति द्वारा की गई व्याख्या, टिप्पणी आदि को लेकर, विभिन्न समूहों में तनाव उत्पन्न हो जाता है। ऐसा होते ही टीवी चैनल्स पर प्रायोजित, कर्कश डिबेट्स शुरू हो जाती है। इसी प्रकार कई बार, घृणित मकसद से किसी धर्मग्रन्थ के कुछ पन्ने फाड़ कर फेंक दिए जाते है या ग्रन्थ को किसी अपवित्र स्थान, सड़क पर डाल दिया जाता है। कई बार ऐसा किसी से भूल, लापरवाही से भी ऐसा हो जाता है। इन घटनाओं को लेकर भी विजुअल-प्रिंट मीडिया में तरह-तरह के भड़काऊ बयानों की बाढ़ आ जाती है।

प्रश्न है कि आखिर ऐसी बातों पर हम लोग मरने मारने को क्यों भुजाएं फड़काने को तैयार ही रहते है या तैयार कर दिए जाते है?

क्या धर्म ग्रन्थ ईश्वर द्वारा रचित-लिखित है?

इस लेखक का मानना है कि कोई धर्मग्रन्थ इस प्रकार का क्लेम नहीं करता। अधिक से अधिक यह माना जाता है कि धर्मग्रन्थों में, समय-समय पर ईश्वर नें अपने विशेष कृपा पत्र शिष्यों, भक्तों, अनुयायियों को जो रास्ता दिखाया, उपदेश दिए उनका अनुयायिओं द्वारा किया गया संकलन है।

ईश्वर की वाणी को जैसा उनके अनुयायी समझें उसके अनुसार उन्होंने उसे लिखा है। फलत बात तो यह है कि शिष्य नें जो कुछ सुना, उसको वह उसी अर्थ में समझा जो ईश्वरीय वाणी थी, जरूरी नहीं। बहुत सामान्य सी बात है कि सुनने और समझने में अंतर आ सकता है। समझने और उसको लिखने में शब्दों के चयन के कारण भी अंतर आ सकता है। लिखे हुए को पढ़कर उसे समझने में और मूल लेखक की समझ में भी अंतर सम्भव है।

विभिन्न धर्म ग्रन्थों में बहुत सी बातों पर सदैव से मतभिन्नता रही है, भिन्न-भिन्न व्याख्याएं होती आई है। बदली सामाजिक, राजनीतिज्ञ, भौतिक परिस्थितियों के अनुसार नई व्याख्याएं आना स्वभाविक है।

हिन्दू धर्म ग्रन्थों पर भी अनेक टिकाएं-व्याख्याए है। द्वैत-अद्वैत की व्याख्याएं है, एकोआहम-द्वितीय नास्ति कोई की अनेक व्याख्याएं है, मूर्ति पूजा के पक्ष में अथवा उसकी निरर्थकता पर बहस चलती आई है, नास्तिक-आस्तिक पर सदियों से बहस चलती आई है।

कुछ ही महीने पहले तुलसीदासजी द्वारा लिखित रामचरितमानस की कुछ पंक्तियों को लेकर नेताओं, धर्माधिशों के बीच, निरर्थक तीखी बहसें सुनने को मिली। तुलसीदास जी नें राम को मध्य में रख कर एक काव्य रचना की जिसमें राम को एक आदर्श पुत्र, पति, भाई, राजा के रूप में बताया है। इस काव्य रचना को भारत में अनेकानेक लोग धर्मग्रन्थ मानते है और उसको अपने घरों के पूजा स्थान पर आदर से रखते है।

तुलसीदास जी नें काव्य रचना तत्स्मय की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों को मध्य में रख कर की। तब की ओर अब की परिस्थितयों में बहुत बदलाव आ गया। राजतंत्र खत्म जो गए, प्रजातंत्र आ गये।

सभी धर्म ग्रन्थों में इस ब्रह्मांड व मनुष्य की उत्पत्ति के बारे में लिखा गया है। उस समय बोलने वाले और लिखने वाले के जैसा समझ में आया वैसा लिखा। इन बातों में से, अब अधिकांश बाते वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नही ठहरती। कभी इन बातों पर भी धर्माचार्यों से अलग राय रखने वालों को प्रताड़ित-दण्डित होना पड़ा होगा।

आज बहुत से लोग राम द्वारा सीता त्याग को अनुचित मानते है तो बहुत से लोग, राजा का लोकलज्जा के आगे नतमस्तक होने व अन्य कई तर्क देकर उसे उचित ठहराते है। सबसे बड़ा अकाट्य तर्क यह दिया जाता कि राम चूंकि ईश्वर के अवतार थे, उनसे कोई गलत निर्णय हो ही नही सकता। इस के आगे क्या तर्क होगा? स्त्रियों, शूद्रों, निचले स्तर की जातियों के सम्बंध में भी कुछ पंक्तियों के विरुद्ध व पक्ष में समय-समय, निहित स्वार्थी तत्वों द्वारा तीखी बहसें चलाई जाती रहती है। हमे यह समझना होगा कि तुलसीदास जी भगवान या उनके दूत नहीं थे। वे एक मनुष्य थे और उस समय उन्होंने समाज में जो देखा, जैसा समझ वैसा लिख दिया। उन्होंने न कहीं लिखा, न कहा कि उन्होनें जो लिख दिया वह सदैव सदैव के लिए सत्य है।

मनु स्मृति, यद्यपि कोई धर्म ग्रन्थ नही किन्तु इसमें लिखे विचारों को लेकर भी पक्ष-विपक्ष में अनावश्यक बहस देखने को मिलती है। यह किताब काफी पुराने समय में, परिवार-समाज संचालन के नियमो की है जो वर्तमान में भारत के एक संवैधानिक राष्ट्र बनने और संविधान और उसके अंतर्गत बनाए कायदों के मध्यनजर पूर्णत: अप्रासंगिक हो चुके। हाँ, यह सही है कि इसके नियम, आज के दृष्टिकोण से देखे तो, महिलाओं, निम्न जाति के लोग के प्रति घोर अन्यायपूर्ण दिखते है। इसकी अधिक से अधिक यह प्रसांगिकता है कि इस से यह समझा जा सकता है कि तत्स्मय के समाज में हर दृष्टि से भयंकर अन्यायपूर्ण असमानता थी। यह अन्यायपूर्ण असमानताएं समाज सुधार आंदोलनों, शिक्षा के प्रसार के साथ, अच्छे कानून बनने के और प्रगति के अवसरों की बेहतर उपलब्धता के कारण कम से कम होती जा रही हैं।

सभी धर्म ग्रन्थों में इस ब्रह्मांड व मनुष्य की उत्पत्ति के बारे में लिखा गया है। उस समय बोलने वाले और लिखने वाले के जैसा समझ में आया वैसा लिखा। इन बातों में से, अब अधिकांश बाते वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही नही ठहरती। कभी इन बातों पर भी धर्माचार्यों से अलग राय रखने वालों को प्रताड़ित-दण्डित होना पड़ा होगा। समय बीतने के साथ आम आदमी नें यह स्वीकार कर लिया कि जो विज्ञान कह रहा है वही ठीक है और धर्म ग्रन्थों की इन बातों पर अब कोई तकरार नहीं होते।

कुछ तत्व धर्मग्रन्थों की व्याख्याओं को लेकर जानबूझ कर, गलत इरादों के साथ तनाव पैदा करते है। यह सरकार का काम है कि उन्हें त्वरित कंट्रोल करे। जनता को ऐसे तत्वों के हाथों में नही खेलना चाहिए।

धार्मिक यात्राएं–सभी धर्मों के लोग, सदियों से, धर्म से जुड़े पवित्र स्थानों की यात्राएं करते है। मुस्लिम, ईसाई, हिन्दू, सिख, जैन, बौद्ध व दूसरे धर्मों के भी अपने अपने पवित्र-आस्था के स्थल है और वहां जाना नेकी का कार्य व फर्ज माना जाता है। समय बीतने के साथ, आबादी के बढ़ने और माइग्रेशन के कारण लोगों ने मूल स्थानों के अतिरिक्त भी प्रार्थना-आस्था के स्थल बना लिए, वहां भी धार्मिक यात्री के रूप में जाने की प्रथा शुरू हुई। पुराने समय से चली आ रही, इन यात्राओं के निश्चित समय, स्थान, मार्ग है। स्वयमसेवी संगठन, शासन-प्रशासन इन यात्राओं को शांतिपूर्वक करवाने के लिए सारे उचित प्रबंध करते है।

किन्तु वर्तमानं में यह प्रवर्ति बढ़ गई है कि लोग मनमर्जी से स्वयं की अथवा राजकीय भूमि पर बिना शासन-प्रशासन की अनुमति के आस्था स्थल बना लेते है। कायदे से इनके लिए कानूनी अनुमति आवश्यक है किंतु अधिकांशत: ऐसा नहीं किया जाता। इनके पहुँचमार्ग, आसपास के आबादी घनत्व का भी ध्यान नहीं रखा जाता। प्रशासन भी इस ओर समय पर पर्याप्त ध्यान नहीं देता।

यह भी चलन बढ़ गया है कि ऐसे नव निर्मित व पुराने पूजा स्थलों के लिए कोई भी 100-50 लोग कोई दल बनाकर, बिना प्रशासन की अनुमति से, अपनी मनमर्जी के समय, रूट्स से यात्रा निकालने लग गए। इन में से ज्यादातर यात्री- लोग सद्भावना से ऐसा करते होंगे किन्तु कुछ शरारती तत्व जिनका इरादा समाज में तनाव, अशान्ति पैदा करना होता है वे इन यात्राओं में तलवार, भाले व अन्य खतरनाक हथियारों के साथ आते है, जबरन यात्रा का मार्ग बदलते है, दूसरे समुदाय के पूजा स्थलों के सामने अनावश्यक ठहराव करते है, वहां भड़काउ नारे लगाते और येन केन प्रकारेण अशांति पैदा करते, दंगे-फसाद करवाते है। कई बार यह शासन-प्रशासन की निर्णय की गलतियों से होते है। कई बार जानबूझ कर की गई या करवाई गई अकर्मण्यता के कारण होते है। परिणाम-- गरीब व मजदूर लोगों को गभीर चोटें, मृत्यु, उनके के घरों- दुकानों- रेहड़ी- ठेलों को नुकसान, दैनिक मज़दूरो का पलायन। इन सब का परिणाम उनके लिए विषम वितीय संकट उत्तपन्न होना। शायद ही कभी किसी बड़े आदमी के परिवार से जनहानि होती हो या कोई बहुत बड़ा आर्थिक नुकसान होता हो ।

–अतिथि सम्पादक,
महावीर सिंह,
आई.ए.एस. (से.नि.)

वंदे भारत ट्रेन उदयपुर पहुंची, अजमेर-जयपुर तक रविवार को होगा ट्रायल

उदयपुर, (कासं)। वंदे भारत ट्रेन शुक्रवार को उदयपुर पहुंची। यह ट्रेन चेन्नई से चलकर चित्तौड़गढ़ होते हुए दोपहर 1.45 पर उदयपुर के राणा प्रताप रेलवे स्टेशन पर पहुंची जहां से शाम 4 बजकर 16 मिनट पर इसे उदयपुर सिटी रेलवे स्टेशन पर लाकर ट्रैक नं. 5 पर खड़ा किया गया है। वंदे भारत ट्रेन उदयपुर से जयपुर (दुर्गापुरा) के बीच चलेगी हालांकि इसको लेकर रेलवे की ओर से अभी तक कोई कार्यक्रम जारी नहीं किया गया है। ऐसे में इस माह के अंत तक यह सौगात मिल सकती है। इधर, इस ट्रैन का उदयपुर ट्रायल पूरा होने के बाद रविवार को वंदे भारत ट्रेन का उदयपुर-अजमेर-जयपुर मार्ग पर ट्रायल होगा। यह ट्रेन आठ कोच की रहेगी। प्रदेश को तीसरी वंदे भारत मिलने जा रही है।

- **वंदे भारत ट्रेन उदयपुर से जयपुर (दुर्गापुरा) के बीच चलेगी हालांकि इसको लेकर रेलवे की ओर से कार्यक्रम जारी नहीं किया है**

वंदे भारत ट्रेन शुक्रवार को उदयपुर पहुंची। इस ट्रेन को उदयपुर सिटी रेलवे स्टेशन पर लाकर ट्रैक नं. 5 पर खड़ा किया।

इस ट्रैन के उदयपुर से जयपुर (दुर्गापुरा) के बीच चलने की संभावना है। हालांकि इसका रूट अभी उदयपुर से कोटा, सवाईमाधोपुर होकर जाने का सामने आ रहा है लेकिन अभी रेलवे की ओर से इसकी जानकारी नहीं मिली है।

वहीं रविवार को वंदे भारत ट्रैन को उदयपुर से अजमेर-जयपुर रूट पर ट्रायल होगा। इसके लिए रविवार को वंदे भारत ट्रैन सुबह 8 बजकर 10 मिनट पर उदयपुर से रवाना होगी जो मावली, चंदेरिया, भीलवाड़ा होते हुए 12 बजे अजमेर व दोपहर 2 बजकर 10 मिनट पर जयपुर पहुंचेगी। इसके बाद शाम 4 बजे यह जयपुर से रवाना होगी जो रात 10 बजे उदयपुर पहुंचकर अपना ट्रायल पूरा करेगी। ट्रायल पूरा होने के बाद यह ट्रेन किस रूट पर चलेगी इसका निर्णय होगा। ऐसे में कयास लगाए जा रहे है कि अगस्त के अन्त तक प्रदेश में वंदे भारत तीसरी ट्रैन दौड़ती नजर आएगी।

नगर परिषद जालोर में पसरी गंदगी से लोग परेशान

शहर में बारिश के बाद भी अब तक सफाई व्यवस्था माकूल नहीं हो पाई

जालोर, (कासं)। जालोर नगरपरिषद की उदासीनता के चलते शहर में गंदगी से अटा पड़ा हैं। ऐसे में बारिश के बाद अभी तक कई कॉलोनियों के लोग गंदगी से परेशान है। ऐसे में शुक्रवार को स्मार्टफोन वितरण के दौरान महिलाओं की भीड़ परिषद में देखी गई। ऐसे में शहर की सफाई जिम्मा उठाने वाली परिषद में गंदगी पसरी रही। ऐसे में शहर की गंदगी की सफाई कैसे हो सकती है।

जालोर नगरपरिषद में कई पद रिक्त होने के साथ परिषद में कोई धणी धोरी नही होने से कार्मिक भी अपनी अपनी मर्जी से कार्य करते नजर आ रहे है। ऐसे में परिषद में कार्य करवाने आने वाले लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। शुक्रवार को दूसरे दिन इंदिरा गांधी स्मार्ट फोन लेने के लिए महिलाओं की भीड़ परिषद में काफी नजर आई। ऐसे में परिषद के बाहर धूप में महिलाएं फोन के लिए परेशान होती देखी गई। वहीं परिषद में गंदा पानी बहने से लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा। जिसका शहर की सफाई का जिम्मा दिया हुआ है। उस कार्यालय में स्वयं गंदा पानी बहता हो, तो शहर के हालात क्या बयां करते होगे। ऐसे में शहर की स्थिति बद से बदत्तर होती नजर आ रही है। लेकिन परिषद के अधिकारी आंखे मूंदे बैठे नजर आ रहे हैं।

परिषद के लगभी सभी कार्मिक भ्रष्टाचार के बगैर कोई भी कार्य करते नही है। ऐसे में आमजन के कार्य परिषद से करवाना मुश्किल है। शुक्रवार को गंदा पानी परिषद में बहने से खासकर स्मार्टफोन लेने पहुंची महिलाओं को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। परिषद में सभापति मौजूद होने के उपरान्त गंदा पानी उनके कार्यालय के आगे सभी बहता नजर आया। परिषद स्वयं में गंदगी पसरी हो तो शहर के हालात क्या होगे।

- **स्मार्टफोन लेने पहुंची महिलाओं को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा**

जालोर नगरपरिषद में गंदा पानी बहने से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

यह आमजन सोच सकता है। शहर में बारिश के बाद भी तक सफाई व्यवस्था माकूल नहीं हो पाई है। ऐसे में शहर में गंदगी से अटा पड़ा है। वहीं आने वाले समय में भयंकर गंदगी से महामारी फैल सकती है। लोगों ने बताया कि परिषद में कोई सुनने वाला नहीं है। बारिश के बाद जगह-जगह पानी भरा हुआ है। तथा कई जगह सड़कें क्षतिग्रस्त हो चुकी है। ऐसे में क्षतिग्रस्त सड़के हादसा का सबब बनती नजर आ रही है। शहर में गंदगी से आमजन परेशान है।

बाल विवाह के बंधन से मुक्त हुई "कंचन"

जोधपुर, (कासं)। सारथी ट्रस्ट की डॉ. कृति भारती के संबल से कंचन ने बाल विवाह की पीड़ा से मुक्ति पा ली। 11 साल से बाल विवाह का दंश झेल रही कंचन को सारथी ट्रस्ट के संबल से बाल विवाह निरस्त होने से असली आजादी मिल गई। जोधपुर के पारिवारिक न्यायालय संख्या एक ने कंचन के बाल विवाह निरस्त का ऐतिहासिक फैसला सुनाया। जिसके साथ ही सारथी ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी एवं पुनर्वास मनोवैज्ञानिक डॉ. कृति भारती ने देश के पहले बाल विवाह निरस्त से लेकर अब तक लगातार 50 मासूम जोड़ों का बाल विवाह निरस्त करवाने का भी अनूठा कीर्तिमान रच दिया।

जोधपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र निवासी एक दुकान संचालक ने करीब 11 वर्ष पूर्व अपनी सात साल की पुत्री कंचन का विवाह कर दिया था। कंचन

- **डॉ. कृति ने रचा 50 वां बाल विवाह निरस्त का कीर्तिमान**

को बड़ी होने पर ही खुद के बाल विवाह के बारे में पता चला। इस पर वह अवसाद ठास्त हो गई। इस दौरान ही ससुराल वालों ने कंचन का गौना करवाने के लिए दबाव बनाना शुरू कर दिया। इस बीच कंचन के भाई को जोधपुर के सारथी ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी एवं पुनर्वास मनोवैज्ञानिक डॉ. कृति भारती की बाल विवाह निरस्त की मुहिम के बारे में पता चला। कंचन और उसके भाई ने डॉ.कृति भारती से मुलाकात कर खुद की पीड़ा बयां की। जिसके बाद डॉ. कृति भारती की मदद से कंचन के बाल विवाह निरस्त का वाद जोधपुर के पारिवारिक न्यायालय संख्या 1 में दायर किया गया।

कंचन के पारिवारिक न्यायालय में बाल विवाह निरस्त का वाद दायर करना कुछ जाति पंचों को नागवार गुजरा। जाति पंचों ने कंचन, उसके परिजनों और कुछ सहयोगियों को जाति बाहर करने का फरमान सुना दिया। वहीं लाखों का अर्थ दंड भी लगा दिया। कंचन व परिजनों पर जाति पंचों के सितम के बीच सारथी ट्रस्ट की डॉ. कृति भारती की काउंसलिंग के बाद कई जाति पंच कंचन के पक्ष में आ गए और कंचन के परिजनों को बिरादरी में वापस शामिल कर दिया। वहीं कंचन के बाल विवाह निरस्त पर भी सहमति जता दी।

पारिवारिक न्यायालय संख्या एक में कंचन की ओर से चाइल्ड एंड वूमेन राइट्स एक्टिविस्ट एवं एडवोकेट डॉ. कृति भारती ने पैरवी कर बाल विवाह और आयु संबंधी तथ्यों से अवगत करवाया। इस बीच डॉ. कृति की काउंसलिंग और वर पक्ष के वकील प्रकाश पंवार के सकारात्मक सहयोग से दोनों पक्षों में सहमति भी बन गई।

जिसके बाद पारिवारिक न्यायालय संख्या एक के न्यायाधीश मुज्जफर चौधरी ने कंचन के महज 7 साल की उम्र में 11 साल पहले हुए बाल विवाह को निरस्त करने का फैसला सुनाया। न्यायाधीश चौधरी ने समाज को कड़ा संदेश देते हुए कहा कि बाल विवाह का दंश कई पीढ़ियों तक झेलना पड़ता है। मासूमों पर बाल विवाह के सितम को रोकने में सबको समेकित जिम्मेदारी निभानी होगी। देश का पहला बाल विवाह निरस्त करवाने के बाद लगातार मुहिम चलाकर सारथी ट्रस्ट की मैनेजिंग ट्रस्टी और पुनर्वास मनोवैज्ञानिक डॉ.कृति भारती ने प्रदेश भर में अब तक 50 जोड़ों के बाल विवाह निरस्त करवाकर अनूठा कीर्तिमान कायम किया है। विश्व भर में एक मात्र राजस्थान में ही सारथी ट्रस्ट की डॉ.कृति के प्रयासों से 50 जोड़ों के बाल विवाह निरस्त हुए हैं।

डॉ.कृति भारती, मैनेजिंग ट्रस्टी एवं पुनर्वास मनोवैज्ञानिक, सारथी ट्रस्ट, जोधपुर का कहना है कि कंचन को बाल विवाह से मुक्ति मिल गई हैं। इसके साथ ही मेरे प्रयासों से प्रदेश में बाल विवाह निरस्त का अर्धशतक पूरा हो गया, यानी कि विश्व में 50 बाल विवाह केवल राजस्थान में ही निरस्त होने का अनूठा कीर्तिमान बना है। मेरा सपना है कि बाल विवाह केवल इतिहास की किताबों में दफन हो जाए। कंचन के बेहतर पुनर्वास के प्रयास किए जा रहे है। कंचन, बाल विवाह पीड़िता ने कहा कि कृति दीदी की मदद से मेरा बाल विवाह निरस्त हो गया है। मैं बहुत खुश हूं। अब मैं अपने सपने पूरे करूंगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 12 अगस्त, 2023

द्वि. सावन मास (अधिक), कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, मृगशिरा नक्षत्र प्रात: 6:02 तक, हर्षण योग दिन 3:22 तक, बालव करण प्रात: 6:32 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-सिंह, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज कमला (पुरूषोत्तम) एकादशी व्रत वैष्णवों का है। आज उन्मीलिनी महाद्वादशी व्रत है। आज एकादशी तिथि में वृद्धि हुई है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:38 से 9:16 तक, चर 12:32 से 2:10 तक, लाभ-अमृत 2:10 से 5:26 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:00, सूर्यास्त 7:03

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मिथुन

अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

सिंह

आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

तुला

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

धनु

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मकर

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

घर-परिवार में चल रहे आपसी आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।